https://knowledgeflame.in PRGI Reg. No. MAHMUL/2024/89852 E-ISSN: 3049-1541
KNOWLEDGE FLAME
INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (KF-IMRJ)
(An International Indexed & Peer Reviewed Journal)

कहानी और उपन्यास तुलनात्मक अध्ययन

प्रा. डॉ. मारोती उत्तमराव खेडेकर
हिन्दी विभाग
स्व. नितीन महाविद्यालय पाथरी

कहानी और उपन्यास दोनों साहित्य की लोकप्रीय विधाएँ है! कहानी घटना या चरित विशेष का संक्षिप्त रसयुक्त कि जग है! उपन्यास एक नियत साकार का गदयमय कलिपत आख्यान होता है! जिसमें यथार्थ जीवन के निरूपन के साथ-साथ समस्या का उपयुक्त समाधान ढूंढा जाता है! प्राय: कतिपय लोग इन दोनों विधाओं में एक आकारगत भेद मानते हुए इन दोनों में अत्यन्त निकट का संम्बन्ध स्थापित करते है! कुछ तो दोनों में अन्तर ही नही मानते किन्तु जैसा कि डॉ. कृष्णलाल ने लिखा है, "वस्तुत: कहानी उपन्यास का छोटा रूप नही है, वरना वह उससे एक सर्वथा भिन्न और स्वतंत्र साहित्य रूप है!" इन दोनों के मध्य अनेक स्पष्ट विभाजक रेखाएँ खींची जा सकती है!

कथानक के आधारपर भी कहानी एवं उपन्यास में अन्तर मिलता है! कहानी में कथानक की अनिवार्यता नहीं है! आधुनिक कहानीकार कथानक को 'स्टोरी' वायजन मानता है! उपन्यास में कथानक की स्थिती अनिवार्य होती है! उपन्यास के कथानक में एक मूल कथा के साथ कई अवान्तर कथाएँ संलग्न होती है कहानी में प्राय: एक ही कथा तन्तू विद्यमान रहता है। कथानक के आरोह-अवरोह में भी दोनों भिन्नता प्रदर्शित करते है। कहानी झरने की धारा की भाँती अचानक चल पडती है। उसकी दौड-परिधि सीमित किन्तु क्षिप्र होती है। इसके विपरित उपन्यास एक नदी के समान है जिसका आरम्भ और अवसान तीव्र गति से होता है किन्तु मध्यम मंथर गति से अग्रसर होता है!

उपन्यास और कहानी में एक महत्वपूर्ण अन्तर चरित्र चित्रण सम्बन्धी है। पाश्चात्य समीक्षक हंडसन के अनुसार में चरित्र का उद्घाटन मात्र होता है जबकि उपन्यास में चरित्र का विकास किया जाता है। कहानी और उपन्यास में एक स्थूल अन्तर आकारगत है। कहानी प्राय: एक बैठक में समाप्त हो जाती है, परन्तु उपन्यास के लिए ऐसा होना अनिवार्य नही है। कहानी के पिछे सृजनात्मक प्रेरणा क्षणिक होती है, शिखाज्वाल के समान जो शीघ्र ही बुझ जाय उपन्यास में सृजन-प्रेरणा को समय की लम्बी अवधि तक घोषित करना होता है। सहआकारगत अन्तर विषय वस्तू पर आधारित है। वासुदेव शास्त्री के शब्दों में कहानी मै जहाँ जीवन की एक झलक दिखाने कि चेष्टा की जाती है। वहाँ उपन्यास में जीवन की विशद और विषय परिस्थितीयों का चित्रण होता है।

एक ही वस्तु या भाव को केन्द्र बनाकर जितना महत्वपूर्ण उसे कहानी में बना सकते है उतना उपन्यास के विस्तृत कैनवास पर सम्भव नही। कहानी विविधता में एकता का निर्वासन करती है। विस्तार उपन्यास का आवश्यक गुण है।

https://knowledgeflame.in PRGI Reg. No. MAHMUL/2024/89852 E-ISSN: 3049-1541
KNOWLEDGE FLAME
INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (KF-IMRJ)
(An International Indexed & Peer Reviewed Journal)

वातावरण अथवा देश काल की दृष्टी से भी कहानी व उपन्यास में पर्याप्त पार्थक्य है। कहानीकार वातावरण चित्रण के अपना लक्ष्य नही बना सकता जबकी उपन्यासकार के लिए यह सर्वथा संभव है। इसके अतिरिक्त उपन्यास में देश काल की अनेक समस्याएँ एवं प्रश्न समाहित है। जैसे गबन उपन्यास में आभूषण प्रेम आर्थिक वैषम्य, अनमेल विवाह, पुलिस के आत्याचार आदि अनेक समस्याओं को लिया गया है। इसके विपरित कहानी में एक ही मूलसमस्या होती है और सारा आयोजन उसीपर केंद्रित होता है।

जैनेन्द्रकुमार के शब्दों में कहानी तो एक भूख है जो निरन्तर समाधान पाने की कोशीश करती है। हमारे अपने सवाल होते है। शंकाएँ होती है, चिन्ताएँ होती है और हमे उनका उत्तर उनका समाधान खोजने का सतत प्रयास करते है उपन्यास में इस प्रक्ता का सतत प्रयास नही होता उसके निष्कर्षो में स्थायित्व की मात्रा अधिक होती है।

उपन्यास और कहानी का अन्तर उद्देश्य की दृष्टी से भी स्पष्ट है। डॉ. श्री निवास शर्मा के शब्दों में उपन्यासकार का लक्ष्य चरित्र का चित्र प्रस्तुत करना होता है। वह उसकी पूरी छानबीन के साथ विश्लेषण करने में सफलता प्राप्त करता है। कहानी का उद्देश्य किसी एक दृष्टिकोन को सामने रखना होता है। कहानीकार अर्जुन की भाँती होता है जिसकी दृष्टी केवल लक्ष्य पर केंन्द्रित होती है किन्तु उपन्यासकार वह शिकारी है जो सिंह के शिकारार्थ निकला है परन्तु राह के वन्य पशुओं को भी अपना निशाना बनाता चलता है!

प्रभावन्विति की दृष्टी से भी इन दोनों विधाओं में अन्तर है। इस दृष्टी से कहानी उपन्यास से अधिक समृध्द होती है। बैन्डर मैथ्यू ने लिख भी – 'A good short differs from the novel chiefly in its essential unity which a novel cannot have it.'

प्रो. वासुदेव के शब्दों में कहानी और उपन्यास में जो मौलिक भेद है वह है शिल्प-विधान का कलापक्ष के दृष्टीकोण सें दोनों के मध्य पर्याप्त दूरी है। प्रसिध्द कहानिकार पहाडी के शब्दो में व्यंजकता और प्रतिध्वनी कहानी की जीवने-साँसे है । इसके विपरित उपन्यास प्राय: अभिधा मूलक एवं वर्णन प्रधान होते है। उदाहरण के लिए 'प्रसाद' की कहानी 'पुरस्कार' एवं उनके हि उपन्यास। 'तितली' को देखा जा सकता है। दोनों विधाओं में भाषा के आधार पर भी भेद देखा जा सकता है। कहानी की भाषा अलंकार युक्त एवं कवित्वमयी हो सकती है। किन्तु उपन्यास में ये ही गुण दूर्गुण सिध्द हो जाते है। इसके अतिरिक्त कहानीकार की अपेक्षा उपन्यासकार अधिक कला संयमी होता है।

उपन्यास में कथानक चरित्र और देशकाल इन तीनो की उपस्थिती अनिवार्य है। कहानी में केवल चरित्र प्रधान और अन्य गौण होते है। इसके अतिरिक्त उपन्यास में बीच-बीच में रहस्यां उद्घाटन की प्रवृत्ति काम करती है। कहानी में कौतूहल ही की महत्ता है। अन्तिम संवेदना से ही

https://knowledgeflame.in PRGI Reg. No. MAHMUL/2024/89852 E-ISSN: 3049-1541
KNOWLEDGE FLAME
INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (KF-IMRJ)
(An International Indexed & Peer Reviewed Journal)

कहानी के पिछले संकेत स्पष्ट हो जाते है कि उसी प्रकार जैसे अनुभवों व्द्रारा की स्थिती कहानी पूर्णसंवेदना लेकर कौतूहल में समाप्त होती है।

इस प्रकार हम पाते है कि उपन्यास और कहानी में पर्याप्त अन्तर है। इसमें केवल आकार या विस्तार का अन्तर मानना अनुचित है। यदि कहानी और उपन्यास में केवल विस्तार भेद ही का आस्तित्व होता तो निश्चय ही लम्बी कहानी और लघु उपन्यास नामकरण सर्वथा निरर्थक होते. इतना होते हुए भी दोनों बहुत अधिक निकट की वस्तु है। प्राय जितने भी अन्तर है सभी सूक्ष्म है। दोनों की पृथकता निकटता को भी समाहित किए है। प्रो. मोहनलाल 'जिज्ञासू' की धारणा उचित ही है। कहानी यदि एक बिन्दु है तो उपन्यास उसकी एक रेखा।"

संदर्भ :

१) 'साहित्य जिज्ञासा' आचार्य ललिता प्रसाद शुक्ल, पृ.१२०

२) भारतीय काव्य समीक्षा - डॉ. श्रीनिवास शर्मा, पृ.१२४

३) भारतीय काव्य समीक्षा - पृ. १२४-१२५

४) साहित्य-संदेश - प्रो. शिववालक शुल्क, पृ. ४१६-४१७

५) हिन्दी उपन्यास-एक सर्वेक्षण - महेन्द्र चतुर्वेदी, पृ. १०३